ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-10* November- 2020
Innovation The Research Concept

हिंदी कविता और गांधीवादी दृष्टि

Hindi Poetry and Gandhian Vision

Paper Submission: 12/11/2020, Date of Acceptance: 25/11/2020, Date of Publication: 26/11/2020

क्षमा मिश्रा
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
श्री जेएनपीजी कॉलेज
लखनऊ, भारत

सारांश

समय–समय पर संसार में ऐसे महापुरुष उत्पन्न होते रहे हैं, जो संपूर्ण मानव जाति के लिए प्ररेणा का स्त्रोत होते हैं। बीसवीं शताब्दी में उत्पन्न महानतम व्यक्तियों की श्रृंखला में अग्रणी स्थान के अधिकारी मोहनदास करमचंद गांधी, एक ऐसे ही महात्मा रहे हैं । जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति में अपने विभिन्न आंदोलनों के द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। गांधी जैसी विभूति के सार्वभौमिक प्रभाव से हिंदी साहित्य भी अछूता नहीं रहा। प्रस्तुत शोध आलेख में गांधीजी की दृष्टि, उनके सिद्धांतों का हिंदी कविता पर प्रभाव तथा उनकी विविध रूपों में अभिव्यक्त किस प्रकार हुई है इस पर ही विचार करने का प्रयास किया गया है।

From time to time, such great men have been born in the world, who are the source of inspiration for the entire human race. Mohandas Karamchand Gandhi, the official in the leading position in the series of greatest persons born in the twentieth century, has been one such Mahatma. Who played an important role in India's independence through their various movements. Hindi literature was also not untouched by the universal influence of Vibhuti like Gandhi. The research article presented attempts to consider Gandhi's vision, the impact of his principles on Hindi poetry and how it has been expressed in various forms.

मुख्य शब्द : गांधीवादी, अहिंसा, विश्वशंन्ति, विश्वबधुत्व सत्यनिष्ठा ।
Gandhian, Non-Violence, World Peace, Universalism Truthfulness.

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में तप:पूत चरित्र एवं चिंतन से युक्त बीसवीं शताब्दी में उत्पन्न हुए महानतम व्यक्तियों की श्रृंखला में अग्रणी मोहनदास करमचंद गांधी एक ऐसे कालजयी व्यक्तित्व के रूप में अवतरित महामानव थे, जो अन्य व्यक्तियों के लिए त्याग और तपस्या के अप्रतिम प्रतिमान उपस्थित करते रहे। एक ऐसे महात्मा जिन्हें ईश्वर ने विदेशी सत्ता के दुर्दमनीय अत्याचारों से त्राहि–त्राहि करते हुए आर्त भारतीय जनों का क्रंदन सुनकर उनकी पीड़ा तथा कष्टों से उद्धार हेतु इस धरती पर अवतरित किया। शारीरिक दृष्टि से अत्यंत क्षीणकाय एवं अशक्त से दिखने वाले इस महामानव में अपरिमित शक्ति तथा उनकी वाणी में अद्भुत तेजस्विता थी। श्री रामनाथ सुमन कहते हैं–

"उनकी वाणी में कुछ अद्भुत बल था, जिसने लक्ष लक्ष ह्रदयों को स्पर्श किया। एक कोने से यह वाणी उठी और देखते–देखते सब वाणियों के ऊपर छा गई।"

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध आलेख को लिखने के पीछे यही उद्देश्य रहा है कि साहित्य से व्यक्ति एवं जगत के साथ रागात्मक संबंध किस प्रकार स्थापित हो सकता है तथा गांधी जी जैसे महामानव एवं विराट व्यक्तित्व का युगीन साहित्य पर प्रभाव किस प्रकार की साहित्य रचना को प्रेरित करता रहा। तथा उन कवियों के कवि कर्म को सामने लाना जिन्होंने गांधीवादी दृष्टि के प्रभाव स्वरूप शुद्ध ,सात्विक ,सुरुचिपूर्ण एवं स्वस्थ दृष्टिकोण संपन्न कृतियों की सृष्टि की। जो वास्तव में साहित्य के मूल उद्देश्य 'सहितस्य भाव:' के कल्याणकारी लेखन को सार्थक करता है।

गांधी जी के सार्वभौमिक प्रभाव को हम भारतीय इतिहास व राजनीति में तो प्रत्यक्ष रूप से देखते ही हैं परंतु साथ ही भारत के सामाजिक ,आर्थिक तथा साहित्यिक जगत पर भी उनका प्रभाव स्पष्टतया देखा जा सकता है। हिंदी साहित्य उनके इस प्रभाव से अछूता कैसे रह सकता था। जिस काल में गांधीजी

के आंदोलन भारतीय राजनीति व सामाजिक जीवन की दिशा निश्चित कर रहे थे, उसी काल में हिंदी साहित्य के कवि उनके सत्य, अहिंसा जैसे सिद्धांतों के प्रभाव को अपने साहित्य द्वारा अभिव्यक्ति प्रदान कर रहे थे। डॉ० नगेंद्र हिंदी साहित्य में उनके प्रभाव के संबंध में लिखते हैं।

"गांधी के विराट व्यक्तित्व से प्रेरित होकर भारतीय भाषाओं में विशेषकर हिंदी में काफी काव्य रचना हुई । उनके व्यक्तित्व में कठोर इंद्रिय निग्रह द्वारा अर्जित आत्मिक शक्ति, त्याग एवं अपरिग्रह, सत्य निष्ठा ,आत्म बलिदान, अहम का समाजीकरण ,राग का उन्नयन , नियम आदि अनेक तप:पूत गुण थे , जिनका देश के अधिकांश प्रबुद्ध कवियों की चेतना पर अनिवार्य प्रभाव पड़ा।"

यद्यपि महात्मा गांधी के व्यक्तित्व की प्रशंसा मुक्त कंठ से भारतीय विद्वानों के साथ–साथ विदेशी महापुरुषों द्वारा भी निरंतर की गई है। उनके उल्लेखनीय एवं असाधारण व्यक्तित्व को लक्ष्य करके ही विश्व विख्यात वैज्ञानिक आइंस्टाइन ने भी कहा था कि–

"आने वाली पीढ़ियां इस बात पर विश्वास नहीं करेंगी कि कभी हाड़ मांस का बना हुआ कोई ऐसा मनुष्य पृथ्वी पर निवास करता था ।"

भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम के इस महा योद्धा की विचारधारा को संभवतः वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका जो उसे मिलना चाहिए था। परंतु द्विवेदी युग में राष्ट्रीयता के स्थूल स्वरूप युक्त जो राष्ट्रीय काव्यधारा प्रवाहित हो रही थी , छायावाद में राष्ट्रीयता की उस काव्य धारा पर गांधीवादी विचारधारा का प्रत्यक्ष प्रभाव भी सम्मिलित हो गया था । 1919 से लेकर उनके जीवन काल तक तथा 1948 में उनके महाप्रयाण के पश्चात भी अद्यावधि गांधी जी की विचारधारा किसी न किसी रूप में कवियों व साहित्यकारों को प्रेरित करती रही है ।

छायावादोत्तर काव्य में विशेष रूप से इनकी विचारधारा को जहां हम एक ओर प्रशस्ति परक शैली में लिखे गए काव्य के रूप में देखते हैं तो दूसरी ओर उनकी दृष्टि से प्रेरित होकर लिखी गई रचनाओं में उनके प्रभाव को देखा जा सकता है। कुछ रचनाएं ऐसी भी हैं जहां उनके प्रभाव की अस्वीकृति दृष्टिगत होती है परंतु डॉ विजेंद्र स्नातक का मत है कि–

"गांधी की विचारधारा के खंडन का प्रबल प्रयत्न गांधी के व्यापक प्रभाव की स्वीकृति रही है।"

उनके इस व्यापक प्रभाव का ही परिणाम था कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की विजय पताका फहराने में महात्मा जी के सत्य ,अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी गई। उनका संपूर्ण जीवन इस सिद्धांतों की व्यवहारिक परिणति के रूप में देखा जा सकता है । यद्यपि वे किसी वाद के प्रवर्तक नहीं थी वे स्वयं भी स्वीकार करते थे कि– "गांधीवाद जैसी कोई चीज मेरे दिमाग में नहीं है। मैं कोई संप्रदाय प्रवर्तक नहीं हूं ,तत्वज्ञानी होने का मैंने कभी दावा भी नहीं किया, मेरा यह प्रयत्न भी नहीं है।"

वस्तुत: विविध वाद एवं भारतीय तथा पाश्चात्य विचारको से प्रभावित महात्मा गांधी एक ऐसे समन्वयवादी विचारक थे जिन्होंने मानव मात्र के कल्याण व नैतिक उत्थान को ही केंद्र में रखकर अपने विचारों का प्रतिपादन किया और इन्हीं विचारों के आधार पर जो दर्शन सामने आया उसे गांधीवाद की संज्ञा प्रदान की गई ।

गांधी दर्शन मूलतः सत्य , अहिंसा शांति , विश्व बंधुत्व, सहिष्णुता की नैतिक विचारधारा को सभी प्रकार की समस्याओं (यथा राजनीतिक धार्मिक सामाजिक आर्थिक) के समाधान का मुख्य कारक मानता है । सांप्रदायिकता तथा वर्ग भेद को मिटाकर वसुधैव कुटुंबकम के आदर्श को स्थापित कर उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में भी धार्मिक एवं नैतिकता पूर्ण विचारों को प्रश्रय दिया।

सामाजिक क्षेत्र में व्याप्त असमानता तथा अंधविश्वास पूर्ण रुढ़ियो के निराकरण के वे पक्षधर थे। मानव मात्र की समानता का उद्घोष करने वाले महात्मा, गांधी उन सभी प्रथाओं को समूल उखाड़ फेंकना चाहते थे, जिनके मूल में अमानवीय, अधार्मिक तथा गर्हित भावनाएं थी । हरिजनों के उद्धार के पीछे भी संभवत उनकी यही भावना विद्यमान थी। राम के अनन्य सेवक महात्मा गांधी यद्यपि मूर्ति पूजा के पूर्णतया विरोधी तो नहीं थे परंतु जप, माला, छापा, तिलक जैसे वाह्याचार व आडम्बर में कभी भी विश्वास नहीं किया। यह मानसिक ,आत्मिक ,शारीरिक शुद्धि को प्रधानता देते थे तथा इस शुद्धि के लिए उपवास को साधन एवं सत्याग्रह को अमोघ अस्त्र मानते थे।

उनकी इस दृष्टि को पंडित सोहनलाल द्विवेदी द्वारा बड़ी ही सुंदर शैली में इस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है–

"मानवता का पावन मंदिर,
निर्माण कर रहे सृजन व्यस्त!
बढ़ते ही जाते दिग्विजयी,
गढ़ते तुम अपना रामराज्य।
आत्माहुति के मणि माणिक से,
मढ़ते जननी का स्वर्ण ताज।"

शैक्षिक क्षेत्र में वे प्राथमिक शिक्षा से लेकर ग्रामीण शिक्षा, बुनियादी शिक्षा , उच्च शिक्षा पर समय–समय पर प्रकाश डालते हुए ऐसी शिक्षा पद्धति को प्रधानता देना चाहते थे, जो मनुष्य को स्वाबलंबी बनाएं तथा किसी ना किसी हस्तकला या कुटीर उद्योग में उसे कुशल बनाती हो। प्रत्येक व्यक्ति को परिश्रम के महत्व से वह परिचित कराना चाहते थे । भले ही उनकी यह परिकल्पना व्यवहारिक प्रतीत ना होती हो परंतु इसका परिप्रेक्ष्य अत्यंत व्यापक था तथा यह एक क्रांतिकारी विचारधारा थी । आज प्रस्तुत की गई नई शिक्षा पद्धति में लगभग इसी विचारधारा को तथा शिक्षा संबंधी इसी दृष्टिकोण को महत्व दिया गया है । जहां शिक्षा को स्वावलंबन से जोड़कर एक ऐसी नीति का निर्धारण किया गया है, जिसके द्वारा व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किया जा सके। यह गांधी जी की ही कल्पना थी जिसे कविवर सुमित्रानंदन पंत अपने 'इंद्रधनुष' नामक कविता में जीवंत

रूप देते हुए एक नई शिक्षा पद्धति की आवश्यकता की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं–

"शिलान्यास मानव शिक्षा का करना हमको नूतन,
आत्म ऐक्य और व्यक्ति मुक्ति का स्वर्ग सौध रच शोभन!
वाग यंत्रों से, वाक् चित्रों से वाहित कर संचित मन,
जनगण में भर सकते हम चेतना रुधिर का प्लावन!
ललित कलाओं से धरती का रूप बने मनुजोचित,
शोभा के स्रष्टा हों जन, जीवन के शिल्पी जीवित!
भावी स्वप्न दृगों में ,उर में हो सौंदर्य अपरिमित,
काव्य चित्र संगीत नृत्य से जनजीवन सुख स्पंदित।"

गांधी जी की इस विचारधारा की प्रतिध्वनि हमें नई शिक्षा नीति में वहां प्राप्त होती है, जहां वे अपनी भारतीय भाषाओं में ही शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में दिखते हैं। उच्चतम शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा की प्रमुखता पर बल देते हुए हिंदी साहित्य सम्मेलन इंदौर में उनके दिए गए अध्यक्षीय भाषण को पढ़कर ही प्रसिद्ध हिंदी कवि भवानी प्रसाद मिश्र ने 'हिन्दी भाषा' कविता की रचना की । जिसमें वे लिखते हैं–

"यदि हम को उत्तर से दक्षिण पश्चिम से पूरब जाना है–
तो अनिवार्य सीखना हिंदी सबको हो जाता है भाई,
गांधी जी ने हमें हमेशा इस विचार की याद दिलाई।"

और ऐसा ना होने पर क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं उसकी ओर संकेत करते हुए आगे लिखते हैं –

"प्रजा अगर उत्तर और दक्षिण की ना ठीक मिल सकी हमारी
तो यह छोटा अंश किसी स्वार्थ विवश रस–विरस करेगा
पारस्परिक प्रेम के बदले क्रोध और प्रतिरोध भरेगा।"

मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने के संदर्भ में वे हिंदी पत्र नवजीवन में लिखते हैं–

"अगर मेरे हाथ में तानाशाही सत्ता हो तो मैं आज से ही विदेशी माध्यम के जरिए दी जाने वाली हमारे लड़कों और लड़कियों की शिक्षा बंद कर दूं।"

उनके अहिंसात्मक विचारों के द्वारा उन्होंने भारतीय जनता में एक नई स्फूर्ति तथा शक्ति के संचार का प्रयास किया।

हिंदी साहित्य में मुख्यता: छायावादोत्तर काल में जिन कवियों पर गांधीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व का प्रेरणादायी प्रभाव दृष्टिगत होता है उनमें सर्व श्री राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, सुभद्रा कुमारी चौहान , माखनलाल चतुर्वेदी ,कविवर सुमित्रानंदन पंत ,बालकृष्ण शर्मा नवीन, पंडित सोहनलाल द्विवेदी एवं भवानी प्रसाद मिश्र आदि प्रमुख रहे हैं।

मैथिलीशरण गुप्त जी के विश्ववेदना, अजित, भारत भारती, साकेत, द्वापर आदि अनेक रचनाओं में गांधीवादी विचारधारा का चित्रण सत्य, अहिंसा सत्याग्रह, हरिजनों द्धार, ग्राम सुधार व स्वाबलंबन की भावना के विकास के रूप में हुआ है। प्रसिद्ध कृति साकेत में सीता का वन में जो स्वाबलंबी रूप प्रस्तुत किया गया वह अयोध्या वासियों को छोटे–छोटे कुटीर उद्योगों की स्थापना की प्रेरणा प्रदान करता है। सियारामशरण गुप्त की बापू रचना में उन्हें सत्य, अहिंसा का मंत्र देने वाले ऐसे ऋषि की संज्ञा देते हैं, जिसकी वाणी में नारायण की झलक दिखती है–

"ऊर्जस्वित, सत्य के, अहिंसा के, अमृत से ,मुक्त छल छद्म के अनृत से।
बोला यह कोई मंत्र दृष्टा ऋषि नूतन में, प्राण के पवित्र नवोद्बोधन में ।"

गांधीवादी विचारधारा सत्यमेव जयते के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हुए अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध लिखते हैं–

"सत्य के सम्मुख ठहरेगा। भला कैसे असत्य जन स्व।
तिमिर सामना करेगा क्यों। दिवस का, जो है रवि संभव।।"

द्वापर में गुप्त जी इसी अहिंसात्मक विचारधारा को अपनाने का आग्रह व्यक्त करते हुए लिखते हैं–

"तुम मेरे अनुगामी, यह तो मुझ पर प्यार तुम्हारा ।
पर विरोध करने का पहले है अधिकार तुम्हारा।
सोचो समझो मेरी बातें और उचित यदि मानो,
तो फिर तुम उनके प्रसार का भार आप पर जानो।"

उनकी अहिंसात्मक नीति ने कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान को भी प्रभावित किया है। वह अपनी काव्य पंक्तियों में अशोक को आदर्श के रूप में रखते हुए सत्कर्म करने की प्रेरणा देते हुए लिखती हैं –

" हम हिंसा का भाग त्याग कर विजयी वीर अशोक बने।
काम करेंगे वही कि जिससे लोक और परलोक बनें।ष

कुछ इसी प्रकार के विचारों को अभिव्यक्त करते हुए पंडित राम नरेश त्रिपाठी लिखते हैं–

"रक्तपात करना पशुता है, कायरता है मन की ,
अरि को वश करना चरित्र से, शोभा है सज्जन की।"(पथिक)

कवियों ने गांधी जी के सत्य, अहिंसा के सिद्धांतों को प्रचारित करने हेतु एक ओर युद्ध के विनाशकारी परिणामों को बताते हुए लोगों को सचेत किया दूसरी ओर आंतरिक शक्ति और आत्मिक तथा आध्यात्मिक परिवर्तन पर भी बल दिया। गांधीजी के अनुसार पवित्र और पूर्ण व्यक्ति ही मानवता के नवीन मूल्यों का व्यवस्थापक एवं नवीन मानवीय संस्कृति का निर्माता होता है। सुमित्रानंदन पंत जी कहते हैं–

गांधीवाद जगत में आया ले मानवता का नव मान,
सत्य अहिंसा से मनुजोचित नवसंस्कृति करने निर्माण!
गांधीवाद हम जीवन पर देता अंतर्गत विश्वास,
मानव की नि: सीम शक्ति का मिलता उससे चिर आभास!
व्यक्ति पूर्णबन जग जीवन में भर सकता है नूतन प्राण,
विकसित मनुष्यत्व कर सकता न पशुता से जनकल्याण! "

गुप्तजी 'विश्व वेदना' में युद्ध के विनाशकारी परिणामों को चित्रित करते हुए लिखते हैं–

"सब ने किया प्रयास सदा तन के रोगों पर,
क्यों अब नए प्रयोग ना हो मन के योगों पर,
गांधी जी का यही यत्न प्रभु करे सफल हो,
क्या बाहर के विध्न, हमारे भीतर बल को।"

भवानी प्रसाद मिश्र साहित्य में उनकी स्वीकृति उचित रूप में ना होने पर खेद प्रकट करते हुए कहते हैं–

कोई नहीं उठाता गांधी गीत
अकेला गाता तो हूं।

वहीं सोहनलाल द्विवेदी अपनी भैरवी संकलन में गांधी जी के प्रभाव को से गांव का संत शीर्षक कविता में कुछ इस प्रकार व्यक्त अभिव्यक्त करते हैं–

"ये कोटि कोटि चल पड़े किधर? नव यौवन का आवेश लिए।

यह कौन चला जाता पथ पर नवयुग का नव संदेश लिए?

निष्कर्ष

अतएव स्पष्ट है गांधीवादी दृष्टिकोण के व्यापक प्रभाव द्वारा शुद्ध, सात्विक सुरक्षित एवं स्वस्थ दृष्टिकोण से संबंधित कविताओं की सर्जना की गई। यद्यपि व्यवहारिक रूप में गांधीवादी विचारधारा को आत्मसात करना ही स्वयं में अत्यंत दुष्कर कार्य है और उस विचारधारा को काव्य में कविता की काया में व्यक्त करना और भी दुष्कर कार्य है। छायावादोत्तर काल के अनेक कवियों द्वारा गांधी जी के सिद्धांत को प्रचारित करती रचनाओं का सृजन किया गया जिसकी महत्ता पूर्वाग्रह से मुक्त होकर मूल्यांकन करने पर ही स्वत: सिद्ध होती है। मानवता के हित में उनके द्वारा किए गए कृत्यो हेतु संपूर्ण मानव जाति उनकी ऋणी रहेगी। सोहनलाल द्विवेदी जी के शब्दों द्वारा हम भावांजलि समर्पित कर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता इस प्रकार ज्ञापित कर सकते हैं–

"कुछ कर्म तुम्हारे संचित कर
युग कर्म जगा, युगधर्म तना।
युग परिवर्तक ,युग संस्थापक,
युग संचालक, हे युगाधार!
युग निर्माता, युग मूर्ति,
तुम्हे युग युग तक युग का नमस्कार।"

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ अरविंद जोशी– गांधी विचारधारा का हिंदी साहित्य पर प्रभाव, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा।*
2. *श्री रामनाथ सुमन–गांधीवाद की रूपरेखा । साधना सदन, दिल्ली ,प्रथम संस्करण।*
3. *अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध– वैदेही वनवास , हिंदी साहित्य कुटीर ,बनारस।*
4. *मैथिलीशरण गुप्त–विश्व वेदना साहित्य सदन ,झांसी।*
5. *भवानी प्रसाद मिश्र– गांधी पंचशती, सरला प्रकाशन, नई दिल्ली।*
6. *सियारामशरण गुप्त– बापू ,साहित्य सदन, चिरगांव ,झांसी।*
7. *सोहनलाल द्विवेदी – भैरवी , इंडियन प्रेस लिमिटेड ,इलाहाबाद ।*
8. *सोहनलाल द्विवेदी– सेवाग्राम, इंडियन प्रेस लिमिटेड ,इलाहाबाद।*
9. *सुमित्रानंदन पंत– युगपथ, भारतीय भंडार लीडर प्रेस ,प्रयाग।*
10. *विचार के क्षण –डॉ विजेंद्र स्नातक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली प्रथम संस्करण।*
11. *पत्रिका पत्रिकाएं*
12. *'हिंदी नवजीवन', 2 सितंबर 1921।*